Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 09, Issue 03, June 2022
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2022

झूरी गायन: एक जनसंचार माध्यम

SUNIL KUMAR[1] & DR. DEVRAJ SHARMA[2]

1 Ph.D. Research Scholar, Music Department (Vocal), Himachal Pradesh University, Shimla
2 Associate Professor, Music (Vocal), GDC Sangrah, Distt. Sirmour

सार संक्षेपिका

सिरमौर जनपद अपने गर्भ में अलौकिक लोक संस्कृति तथा लोक संगीत की विभिन्न विधाएं समेटे हुए है। इन्हीं विधाओं में झूरी गायन शैली भी प्रमुख है। झूरी गायन शैली जनपद की बहुत प्रसिद्ध, प्राचीन तथा मनोरंजक गायन शैली है। यह अनिबद्ध गायन शैली थी, लेकिन वर्तमान में लोक गायकों ने इसे निबद्ध कर दिया है। प्राचीन काल में जब व्यक्ति सुविधाओं से कोसों दूर सूनसान तथा अलग-थलग था। उस समय मनोरंजन, आंतरिक उद्गारों तथा आवश्यक सूचनाओं को दूर स्थित लोगों तक पहुंचाने का एकमात्र साधन झूरी गायन शैली था। यह वह समय था जब व्यक्ति घर से निकलते ही खुद को जंगलों में दुनिया का इकलौता इंसान समझने पर मजबूर हो जाता था। गांव के अलावा कहीं मनुष्य दिखाई नहीं देता था। ऐसी विकट स्थिति में झूरी गायन उसको सहारा देती थी। वह दूर स्थित व्यक्ति से भी झूरी के माध्यम से वार्तालाप कर सकता था। झूरी गायन की विशेषता है कि यह गायन केवल जंगलों में बैल, बकरी चुगाते या घास काटते समय ही गायी जाती थी। इसे आरण्य गायन शैली भी कहते है। इसमें सवाल-जवाब अकसर रहते है इसलिए इसे प्रश्नोत्तरी गायन भी कहा जाता है। इस गायन के माध्यम से दूर बैठा व्यक्ति किसी अनजान व्यक्ति से बातें कर सकता है तथा कोई प्रश्न पूछ कर उसका जवाब भी प्राप्त कर सकता है।

परिवर्तन की इस लहर ने इस गायन शैली को भी अछूता नहीं छोड़ा झूरी गायन शैली का स्थान वर्तमान में मोबाइल फोन ने ले लिया है। वर्तमान में झूरी गायन अब बैल, बकरी चुगाते किसी बुजुर्ग के मुंह से कभी-कभार सुनने को मिल जाता है। इस शोध पत्र के माध्यम से जनपद की स्वर्णिम तथा बहुउद्देश्यी गायन शैली झूरी की वास्तविकता तथा इसके गुणों से युवा पीढ़ी को अवगत करवाना है। जो उत्सुकता तथा प्रेम भाव इस गायन शैली में है वह मोबाइल फोन में नही है। यह गायन शैली एक अनजान व्यक्ति को भी आपसे जोड़ देती थी। इस गायन शैली से आपसी-प्रेम भाव तथा भाई चारा बढ़ता था। एक-दूसरे के प्रति आदर तथा सत्कार को बढ़ावा मिलता था। वर्तमान में झूरी गायन लुप्त होने की कगार पर है। झूरी गायन दिन प्रतिदिन अपनी वास्तविकता खोता जा रहा है।

प्रमुख शब्द: झूरी, जनसंचार, सवाल-जवाब, आरण्य गायन, मनोरंजन।

भूमिका

झूरी लोक संगीत और जनसंचार की द्विधारी कला है। झूरी शब्द सिरमौर जनपद में प्रेमी-प्रेमिका संवाद का काल्पनिक शब्द है। प्रेमी अपनी प्रेमिका के नाम का उच्चारण मात्र से समाज में बदनाम न हो जाए इस डर से वह अपनी प्रेमिका को झूरी कह कर संबोधित करता है। एक मत यह भी है कि झूरी शब्द का लोक बोली में अर्थ 'झूरना' होता है अर्थात् किसी विशेष व्यक्ति के प्रति दया भावना, संवेदना या प्रेम। समाज में हर व्यक्ति के प्रति प्रेम तो संभव नहीं, जो आपका करीबी होगा उसी के प्रति यह भावना रहती है। झूरी शब्द इसी शब्द का विकृत रूप है।

सिरमौर जनपद में झूरी गायन शैली को जनमानस ने वैज्ञानिक ढंग से व्यवहारिक जीवन से जोड़ा है। झूरी जनपद की सबसे प्राचीन गायन शैली है। यह गायन शैली अनिबद्ध है। झूरी में अधिकतर प्रेम प्रसंग व्याप्त रहता है। प्रेमी-प्रेमिका के सवाल-जवाब इत्यादि का संयोग रहता है। लेकिन यह झूरी का वर्तमान रूप है। प्राचीन समय में झूरी का मूल जनसंचार,

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 09, Issue 03, June 2022
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2022

मनोरंजन तथा दूर स्थित व्यक्ति से वार्तालाप या अकेलेपन का दूर करना था। झूरी गायन के माध्यम से एक गांव से दूसरे गांव में कोई सूचना आपातकालीन दी जाती थी। इसी माध्यम से आपको तुरंत उत्तर भी प्राप्त हो जाता था।

जनपद में शाठी-पाशी समुदायों का आपसी टकराव प्राचीनकाल से ही रहा है। शाठा (जिन्होंने महाभारत युद्ध मंे कौरवों का साथ दिया) पाशा (जिन्होंने पांडवों का साथ दिया) समुदाय के आपसी विवादों के कारण एक-दूसरे के गांव पर हमला करने के लिए जूज (युद्ध, दल, सैनिक) आया करते थे। शाठा दल, पाशा दल के गांव के लोगों को मारते थे तथा पाशा दल शाठा दल लोगों को। गांव से दल को जाते हुए देख लोग, दूसरे गांव में अपने हितैषी की जीवन रक्षा के लिए उसे सचेत करने के लिए झूरी गा कर संदेश दे देते थे। संदेश अगर ज्यादा जरूरी हो तो दिन में धुंआ तथा रात को आग जला कर दिया जाता था। धुंआ तथा आग आपातकालीन तथा खतरे के संकेत थे। यह देखकर दूसरे गांव के लोग अपने प्राणों की रक्षा के लिए या तो भाग जाते थे या फिर युद्ध लड़ने के लिए तैयार हो जाते थे। (साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी)

साहित्य की समीक्षा

सिरमौर जनपद 'झूरी' गीतों के लिए विशेष प्रसिद्ध रहा है। यह गीत हिन्दी के दोहों के समान दो पंक्तियों तथा चार चरणों में पिरोए गए है। यह अनिबद्ध रूप में गाए जाते है। इन गीतों में प्रेमी-प्रेमिका के परस्पर सवाल-जवाब का वर्णन रहता है। यह जंगलों में पशु चराते, लकड़ी काटते आदि अवसरों पर सुने जाते है। (हिमप्रस्थ, 2019 पृ॰ 187)

झूरी: झूरी गीत ताल बद्ध नहीं होते। इनका मुख्य विषय प्रणय, विरह, प्रतीक्षा, वायदे-उलाहने और सच्चे प्रेम की अभिव्यक्ति है। इसमें नायक-नायिका का सवाल-जवाब का वर्णन रहता है। (हिमप्रस्थ, 2019, पृ॰ 190)

शोध की आवश्यकता

वर्तमान समय में परिवर्तन का खुमार लोगों के दिमाग को चढ़ गया है। ऐसे परिवेश में प्राचीन लोक गायन शैलियां लुप्त होने की कगार पर है। इस बात को मध्यनज़र रखते हुए ''झूरी गायन एक जनसंचार माध्यम का अवलोकन'' विषय पर शोध करने की आवश्यकता है। अगर भावी पीढ़ी को लोक संगीत की अनिबद्ध शैली झूरी से अवगत करवाना है तो इस शोध की आवश्यकता है। झूरी गायन लुप्त हो गया तो भावी पीढ़ी इस शोध पत्र के माध्यम से तो इस शैली का ज्ञान ले सकती है। जनमानस का आंतरिक उद्गारों को व्यक्त करने का स्वतंत्र मंच झूरी ही था। अगर यह शैली लुप्त हो गई तो यह स्वतंत्र मंच खत्म हो जाएगा। लोक संगीत से ग्रामीण परिवेश खत्म करने के बाद उसमें लोक भाव नहीं रह जाता है। वर्तमान में फिल्मी संगीत तथा नगरों की चकाचैंध भरी जिन्दगी युवाओं को आकर्षित कर रही है। इस आरण्य गायिकी के महत्व को जानकर युवा लोक संगीत में रूझान लेने लगेंगे।

उद्देश्य

कोई भी कार्य करने के पीछे मानव का कोई उद्देश्य या स्वार्थ अवश्य छिपा होता है। बिना उद्देश्य तथा स्वार्थ के कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं होता। इस शोध के पीछे बहुत बड़ा उद्देश्य है।

- झूरी गायन का अध्ययन करना।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 09, Issue 03, June 2022
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2022

अनुसंधान क्रिया की विधि

इस शोध पत्र के दत्त संकलन के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। दत परीक्षण के लिए प्रश्नावली तथा साक्षात्कार उपकरणों का प्रयोग किया गया है। शोध पत्र से प्राप्त उत्तरों में अस्सी प्रतिशत समानता के बाद ही दत्त को शोध पत्र में संकलित किया गया है। इस शोध पत्र में प्राथमिक दत्त के साथ-साथ झूरी गायन शैली से संबंधित व्यक्तिगत अवलोकन भी प्रयोग किया गया है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

झूरी बहुत प्राचीन गायन शैली है। विद्वानों का मत है कि झूरी पृथ्वी निर्माण के बाद जब जीवन संचार हुआ तो स्वर की पहली लहरी से झूरी गायन शैली की उत्पत्ति हुई। एक मत यह भी है कि जिस प्रकार एक बच्चा जन्म के बाद समय के साथ-साथ हंसना, खेलना, रोना खुद ही सीख लेता है। सृष्टि निर्माण के बाद मानव ने प्रकृति को गुरु मानकर मनमोहक दृश्यों का पान कर, अपनी खुशी जाहिर करने के लिए, जो लम्बी लय में हिलोर दी थी, वही धीरे-धीरे विकृत होती हुई झूरी के स्वरूप में सामने आई। यह अनिबद्ध गायन शैली है, क्योंकि उस समय वाद्यों का निर्माण नहीं हुआ था। समय परिवर्तन के साथ-साथ जरूरतों के अनुसार नई-नई खोजें होने लगी। मानव का स्वभाव हमेशा से चीजों को परखने तथा जानने का रहा है। ऐसे समय परिवर्तन के साथ मनुष्य शब्दों का उच्चारण करने लगा तथा बोली का निर्माण हुआ। अब मनुष्य ने झूरी गायन में मनचाहे तथा स्वछंद भाव से शब्दों को प्रयुक्त किया। इसी तरह काल प्रवाह से झूरी में काव्य भी बनने लगा। यह काव्य बदलता रहता है। यह हमेशा से ही जंगलों में गायी जाने वाली शैली रही है। इसी कारण झूरी को वर्तमान में आरण्य गायिकी भी कहते है।

समय परिवर्तन के बाद झूरी का प्रयोग लोग जनसंचार तथा प्रेम प्रसंग के लिए भी करने लगे। झूरी धीरे-धीरे जनमानस की दिनचर्या का हिस्सा बन गई। खेतों में काम करते समय थकान को कम करने के लिए प्रयुक्त होने लगी। घास काटते समय या फिर बैल, बकरी चुगाते समय भी प्रयोग होने लगी। झूरी के काव्य से ग्रामीण जीवन तथा जनपद के भोले-भाले लोगों के संघर्ष भरे जीवन का दर्द स्पष्ट झलकता है। यह गायन एक कण्ठ से दूसरे कण्ठ से होकर निरंतर बहता रहता है। झूरी गायन उस पवित्र जल धारा की तरह है जो किसी भी स्थिति में निरंतर बहती रहती है। राहों में आती रूकावटों को खुद ही पार कर लेती है। (साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी)

जनपद में श्रावण मास (अगस्त-जुलाई) बरसात के मौसम में जब नई नवेली दुल्हन धुंध के कारण आस-पास धुंध की श्वेत चादर देखकर घुटन महसूस करती है। ऐसे समय में उसके पास अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए झूरी ही एकमात्र सहारा है। वह झूरी के माध्यम से ही दूर स्थिति व्यक्ति से समय का पता कर सकती है। जैसे-

प्रश्न: धारो आई काली बादली झूरीए

आण्डो-पांडो न दिशो

का हुआ ऐबे वोक्तो ओऽ

बादली मेरा कालजा लिशो रे ओ।

भावार्थ: पहाड़ों पर काले बादल छाएं है जिसके कारण इधर-उधर भी नहीं दिख रहा है। दिन कितना रहा है या समय क्या हुआ। काले बादल मेरा कलेजा जैसे काट रहे है अर्थात् घुटन सी हो रही है।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 09, Issue 03, June 2022
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2022

उत्तर: ढोली गिया बोलो सूरजो झूरीए

होटी कोफाडो छांई

पाछू फिरे भीआ घोरो के

ऐबे नेहरा ढोलणे के आई।

भावार्थ: समय अब शाम का हो गया है, सूर्य ढल गया है। पहले समय में सूर्य की किरणों से समय का अंदाजा लगाते थे, तभी सामने से उत्तर आता है। अब अंधेरा होने वाला है। घर की तरफ जाना चाहिए। (साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी)

झूरी गायन शैली में सवाल के बाद जवाब पाने की उत्सुकता बनी रहती थी। झूरी के मायध्यम से उत्तरदाता का धन्यवाद भी किया जाता था। वर्तमान समय में तकनीकी विकास के कारण झूरी का स्थान अब मोबाईल फोन ने ले लिया है। नम्बर डायल करके किसी जगह बैठे व्यक्ति से बात कर सकते है। तकनीकी प्रयोग के लिए तो उनकी उपयोगिता के लिए मापक होते है जैसे बिना नम्बर के तो बात असंभव है, लेकिन झूरी गायन में नम्बर की आवश्यकता ही नहीं थी। आप प्रश्न गाकर अनजान व्यक्ति से भी उत्तर पा सकते है।

झूरी का अनिबद्ध स्वरूप

1. झूरी जाणी बोलो गाणे के बुलदा ने जिओ

   सासो भोरिया ओ गुरीजो

   काजली जेरा बुणी दा सियो।

2. बांठणो जुहणो बेरे, झुरिए, होला साथो दा तारा

   आखी रा किया बोली नोरजा, तिंदा बोलो तोला जिबटा म्हारा।

भावार्थ: थकान से बुरे हाल गायक कहता है कि झूरी गाने के लिए मन ही नहीं है लेकिन ‘‘सासो भोरिया ओ गुरीजो’’ जो सामने से कोई गा रहा है, बहुत सुरीला है सांसो में मानो रस घोल दिया हो। उसको सुन कर गाए बिना मन नहीं मानता। ऐसे भारी आवाज में गा रहा है मानो जंगल में बाघ बोल रहा हो।

दूसरी पंक्तियों में गायक कहता है कि तेरे जैसी सुन्दर कन्या को ढूंढने के लिए में चाहे तारों की तरह चारों दिशा में ढूंढ लू नहीं मिलेगी। ‘‘आखी रा किया नोरजा’’ अर्थात् आंखे तुम्हारी इतनी नशीली तथा झील सी गहरी है जिसमें मेरा दिल डूब गया है। झूरी का अनिबद्ध रूप है।

स्वरलिपि

सा	-	-	-	ग	म	ध	ध	-	-	-	-	-
झू	री	ऽ	ऽ	जा	णी	बु	लो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	प	म	ग	रे	सा	-	-	-	-	-		
गा	णो	के	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ		
सा	-	ग	म	-	-	-	ध	-	-	प	-	-

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 09, Issue 03, June 2022
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2022

बु ली ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ दा ऽ ऽ ने ऽ ऽ
ग रे सा - - - सा गम - -
जि ऽ ओ ऽ ऽ ऽ सा सोऽ ऽ ऽ
ध प म प - - - - प - - -
भो रि या ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ओ ऽ ऽ ऽ
म ग रे - - - गरे सा - - - नि -
गु री ऽ ऽ ऽ ऽ जोऽ रे ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
ग - प - म - ग रे - ग रे सा
सि ऽ यो ऽ रे ऽ ऽ ऽ ऽ का ऽ ऽ
रे नि - - - प म ग - रे रेसा सा - ऽ
ज ली ऽ ऽ ऽ जे रा बु ऽ ऽ ऽ णीऽ दा ऽ ऽ

इस झूरी में राग विलावल और राग झिझोटी की छाया अपुष्ट रूप से देखने को मिलती है।

झूरी का वर्तमान स्वरूप

निबद्ध काटी लोणी कुकडी रे हो ऽ ऽ

लाई लोणे गोरे

जिने डोरणा बोदीदा

रोए कोरे झूरीए आपणे घोरे

रोए कोरे झुरीए।

भावार्थ: यह झूरी का निबद्ध प्रकार है। इसकी दो या चार पंक्तियां अनिबद्ध होती है उसके बाद का लोक गीत ‘‘गीह’’ ताल में निबद्ध होता है। ‘‘काटी लोणी कुकडी’’ अर्थात् मक्की की फसल पक गई है। अब इसे काट लेना चाहिए और ‘गोरे’’ अर्थात् कोई मक्की अधपकी हो तो एक जगह एकत्रित करके लगाने से वह पक जाती है। उसको सिरमौरी लोक भाषा में ‘‘गोरे’’ (अर्थात एक जगह एकत्रित करके गर को खत्म करना या पका देना) बोलते है। ‘जिने डोरणा बोदीदा’’ अर्थात् अगर मेरे साथ घूमने से तेरी बदनामी होगी। अगर यह डर है तो घर में ही रहना बाहर मत निकलना। यह पंक्तियां इससे आगे गीह ताल में निबद्ध है।

स्वरलिपि

अनिबद्ध

सा सा सा सा - - - - ग म प ध - प
का टी लो णी ऽ ऽ ऽ ऽ कु क डी रे ऽ ऽ
प प ध सां नि ध प - प ध प ध - प म ध

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 09, Issue 03, June 2022
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2022

ऽ हो ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ला ई ऽ लो ऽ णी रो ऽ

प प म ग रे - - रे ग म प - - - -

ऽ बे गो रे ऽ ऽ ऽ ऽ जि ने डो र णा ऽ ऽ

म ग रे ग रे सा - -

बो दी दा ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

निबद्ध

नि़ सा रे ग म - ग रे सा सा ग रे - सा नि़ -

ति ने बु लो रो ऽ णा आ ऽ प णे ऽ ऽ घो रे ऽ

नि़ सा रे ग म - ग रे सा सा - - - - - -

ति ने बु लो रो ऽ णा आ प ऽ णे ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

2 3 4

यह निबद्ध 16 मात्रिक ‘‘गीह’’ ताल में निबद्ध है जिसे वर्तमान में नाटी ताल के नाम से भी जाना जाता है। अनिबद्ध झूरी को मात्रा आहवान करने के लिए अनिबद्ध प्रयोग किया जाता है। जैसे राग गायन से पहले आलाप किया जाता है। आलाप के बाद बंदिश ताल में गायी जाती है।

प्रश्नोत्तरी द्वारा शोध क्षेत्र से प्राप्त दत्त

झूरी गायन की उत्पत्ति		
1	अति प्राचीनकाल	120
2	प्राचीन काल	30
3	अन्य काल	50

शोध क्षेत्र से लोक संगीत के बुद्धिजीवियों से दत संकलन के लिए साक्षात्कार तथा प्रश्नोत्तरी तैयार की गई थी। सिरमौर जनपद के चार ब्लाकों से 200 बुद्धिजीवियों से प्रश्नोत्तरी द्वारा दत संकलित किया गया। क्षेत्र से प्राप्त जानकारी का परिणाम उपरोक्त दर्शाया गया है।

आपातकालीन स्थिति में कैसे सूचना दें। मोबाईल नम्बर न हो या फिर फोन की बैटरी खत्म हो। तब तकनीकी से यह कार्य असंभव हो जाता है। झूरी गायन में हर बात संभव थी। जो भाव तथा खुशी झूरी में थी, वह मोबाईल के द्वारा असंभव है।

झूरी के प्रति लोगों की बहुत धारणाएं है। लोगों का मानना है कि झूरी एक प्रेमी-प्रेमिका के सवाल-जवाब है। कुछ लोगों का यह भी मानना है कि झूरी, गंगी, भाभी इन तीनों गायन शैलियों में कोई अंतर नहीं है। शोध क्षेत्र में प्रवेश करने के बाद

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 09, Issue 03, June 2022
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2022

तथा लोक संगीत के ज्ञाता बुद्धिजीवियों के साक्षात्कार करके जो दत संकलित हुआ उसने सभी धारणाओं को स्पष्ट कर दिया। गंगी, झूरी और भाभी यह तीनों लोक गायन शैलियां अनिबद्ध है। इसमें यह समानता जरूर है लेकिन इन तीनों की विशेषताएं अलग-अलग है। गंगी गायन केवल बैसाखी (अप्रैल-मई) में पींग (झूले) में झूलते समय गायी जाती है। भाभी गायन में ननद-भाभी तथा देवर-भाभी की आपसी अठखेलियां तथा मजाक का वर्णन होता है। यह केवल ननद-भाभी तथा देवर-भाभी का ही गायन है। झूरी गायन शैली की विशेषता यह है कि यह जंगलों में घास काटते समय या फिर बैल, बकरी चुगाते समय ही गायी जाती है। इसलिए इसे आरण्य गायिकी भी कहते है।

भविष्य के लिए सुझाव

भविष्य में शोधार्थी झूरी को वर्तमान स्वरूप के साथ तुलना कर सकता है। झूरी का स्थान मोबाईल ने ले लिया है। झूरी आपसी भाईचारा बनाने में सक्ष्म थी। क्या मोबाईल सक्ष्म है? जो सुकून इन सवाल-जवाब शैली में था क्या मोबाईल के प्रयोग से रहा है। झूरी गायन का प्राचीन स्वरूप और वर्तमान स्वरूप में अंतर की तुलना इन विषयों पर शोध कर सकते हैं।

निष्कर्ष

झूरी गायन के इतिहास तथा वर्तमान स्थिति का अवलोकन करने के बाद यह निष्कर्ष निकलता है कि झूरी गायन शैली सिरमौर जनपद की सर्वोच्च शैली है। इसका स्थान कोई भी तकनीकी नहीं ले सकती। जो सुकून और मनोरंजन झूरी के माध्यम से प्राप्त होता है। वह तकनीकी के माध्यम से संभव नहीं है। झूरी गायन करने के बाद मन को एक अद्भुत सी शांति का एहसास मिलता है। सवाल के बाद जवाब पाने के लिए इतनी उत्सुकता रहती है जितनी की परीक्षा के बाद परिणाम के लिए रहती है। झूरी गायन को सुरक्षित अगर व्यवहारिक तरीके से नहीं रख पाए तो शोध पत्र के माध्यम से भावी पीढ़ी इसके स्वरूप से अवगत हो पाएगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

डा॰ सहगल, कृष्ण लाल (2019). करवट लेती लोक संस्कृति की समृद्ध धरा. हिमप्रस्थ. पृ॰ 187.
डा॰ शर्मा, मनोरमा (2019). पारम्परिक लोक संगीत में बसती जनपद की रूह. हिमप्रस्थ. पृ॰ 190.

साक्षात्कार

1. राम, मीना, ग्राम गनोग. सिरमौर. 14 मई, 2020.
2. सिंह, कुन्दन, ग्राम रणफुआ. सिरमौर. 20 जून 2021.
3. शर्मा, उदेय राम, ग्राम जाखना. शिलाई. सिरमौर. 10 अप्रैल, 2020.